नवरात्रि पर्व (चैत्र)

नवरात्रि व्रत का मूल उद्देश्य है इंद्रियों का संयम और आध्यात्मिक शक्ति का संचय। वस्तुतः- नवरात्र अंतःशुद्धि का महापर्व है।आज वातावरण में चारों तरफ विचारों का प्रदूषण है। ऐसी स्थिति में नवरात्र का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अपने भीतर की ऊर्जा जगाना ही देवी उपासना का मुख्य प्रयोजन है। भुवाल माता की पूजा और नवरात्र मानसिक-शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। चैत्र की नवरात्रि के साथ रामजन्म एवं रामराज्य की स्थापना का इतिहास है। इस कारण इस नवरात्र का महत्त्व सर्वाधिक है। सर्दी और गर्मी की ऋतुओं का मिलन काल आश्विन और चैत्र मास में जिन दिनों आता है वे नवरात्रि कहलाते हैं। उन दिनों शरीर, मन और प्रकृति के विभिन्न घटकों में विशेष रूप से उल्लास भरा रहता है। वातावरण में विशिष्टता व्याप्त रहती है। नवरात्रि पर्व के दौरान भुवाल माता के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है ।शक्ति स्वरूपा देवी भुवाल को प्रसन्न करने के लिए साल में चार बार नवरात्रि पड़ती हैं जिनमें एक बार शारदीय और

एक बार चैत्र नवरात्रि, इसके अलावा 2 बार गुप्त नवरात्रि के दौरान भक्त माता की आराधना करते हैं ।नवरात्रि में माता की पूजा-अर्चना करने का विधान सदियों से चला आ रहा है ।नवरात्रि के समय प्रकृति में एक अलग ही विशिष्ट ऊर्जा होती है जिसको आत्मसात कर लेने पर व्यक्ति का कायाकल्प हो जाता है। नवरात्रि पर्व का प्रयोजन भी यह है कि हम अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर अपने मन-मस्तिष्क को केंद्रित कर सकें।मेरे चिन्तन से मनोविज्ञान का एक तर्क यह भी हो सकता है कि कोई भी व्यक्ति एक शुद्ध भावना के साथ आस्था रखता है तो उस समय हमारी सोच सकारात्मक रहती है, जिसका प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है, जिससे हम अपने भीतर नई ऊर्जा महसूस करते हैं। इस समय प्रकृति अपना स्वरूप बदलती है। वातावरण में एक अलग-सी आभा देखने को मिलती है। पतझड़ के बाद नवीन जीवन की शुरुआत, नई पत्तियों और हरियाली की शुरुआत होती है। चैत्र नवरात्र में वसंत होता है। प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। वनस्पतियां नवीन पल्लव धारण करती हैं। प्रकृति का उल्लास अपना प्रभाव समूचे वातावरण पर डालता है। जीवधारियों के मन विशेष प्रकार की मादकता से भर जाते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से मनीषियों ने इन दिनों आत्मा के ऋतुमति होने का आलंकारिक संकेत किया है। उनके अनुसार, इन दिनों वह अपने प्रियतम परमात्मा से मिलने के लिए विशेष रूप से आतुर होती है। संपूर्ण सृष्टि में एक नई ऊर्जा होती है। इस ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करने के लिए हमें व्रतों का संयम-नियम आदि बहुत लाभ पहुंचाता है। नौ दिन का व्रत-उपवास प्राकृतिक उपचार के समतुल्य माना जा सकता है। इसमें प्रायश्चित के निष्कासन और पवित्रता की अवधारणा दोनों भाव हैं। नवरात्रि में कृषि-संस्कृति को भी सम्मान दिया गया है। मान्यता है कि सृष्टि की शुरुआत में पहली फसल जौ ही थी। इसलिए इसे हम प्रकृति (मां शक्ति) को समर्पित करते हैं। इस तरह नवरात्रि पर्व का बहुत महत्व हैं । नवरात्रि पर्व पर हमारी ऋद्धि - सिद्धी वर्धमान हों , तन स्वस्थ मन स्वस्थ रहे , स्वस्थ सोच हरदम हो ,आनन्द का सागर लहराए , खुशियों का सरगम हो आदि - आदि यही मंगलकामना ।

प्रदीप छाजेड़, (बोंरावड़)

भाजपा मंडल मिरगपुर और तिरोडी की कार्यकरिणी घोषित

भाजपा कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों ने दी बधाईयां

बालाघाट। भारतीय जनता पार्टी प्रदेशाध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा के मार्गदर्शन, प्रदेश महामंत्री व संभाग प्रभारी सुश्री कविता पाटीदार के अनुमोदन, पूर्व मंत्री, गौरीशंकर बिसेन, सांसद, बालाघाट - सिवनी, श्रीमती भारती पारधी, विधायक, कटंगी-खैरलांजी, गौरव सिंह पारधी की सहमति और जिलाध्यक्ष रामकिशोर नानो कावरे की अनुशंसा से मंडल अध्यक्ष- श्रीमती दिपेश्वरी डोमनसिंह लिल्हारे, मिरगपुर, अविनाश देशमुख, तिरोड़ी ने अपने-अपने मंडलों की संगठन महापर्व के तहत भाजपा मंडल कार्यकारिणी की घोषणा की है। नव दायित्व की शुभकामनाएं देते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष रामकिशोर कांवरे, पूर्व मंत्री गौरीशंकर बिसेन, सांसद श्रीमती भारती पारधी, विधायक, गौरव सिंह पारधी ने राष्ट्रहित, पार्टी की पंचनिष्ठा, जनकल्याण और संगठन समर्पण का विश्वास नवनियुक्त पदाधिकारियों से जताया है। साथ ही भाजपा कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने भी इन्हें बधाइयां दी।

भाजपा मंडल मिरगपुर

इसी कड़ी में मंडल अध्यक्ष श्रीमती दिपेश्वरी डोमनसिंह लिल्हारे ने भाजपा मंडल मिरगपुर कार्यकारिणी घोषित की है। इनमें उपाध्यक्ष- फुलेन्द डहारे, फागुलाल गौतम, श्रीमती ज्ञानवंता मस्करे,ज्ञ खिलेन्द्र बिसेन, महेन्द्र आमाड़ारे, रितुसेन पटले, महामंत्री- नेतलाल रामटेके, सोपनील पटले, मंत्री- रविन्द्र सोनवाने, श्रीमती अंजना भगत, हेमंत कुमरे, श्रीमती श्यामकला उपवंशी, श्रीमती संजुलता हरिनखेड़े, दामोदर राहंगड़ाले, कोषाध्यक्ष- शैलेश ठाकरे, मीडिया प्रभारी- धनेन्द्र सोनगड़े, आईटी प्रभारी- पुनीत तुरकर, सोशल मीडिया प्रभारी- अजीत नन्दागौली। कार्यकारिणी सदस्य- भाऊलाल पटले, तोषण गौतम, विनोद गौतम, शैलेन्द्र नगपुरे, लोकेश बिसेन, रेखलाल राहंगडाले, दीपक

देशमुख, नीलाजी ऐड़े, योगेश्वर क्षीरसागर, राज देशमुख, ओझेलाल चौधरी, संतोष लिल्हारे, पुनाजी लिल्हारे, कुमेन्द्र डहारे, गजेन्द्र मंडलेकर, दिनेश इनवाते, गणेश राहंगड़ाले, राहुल बिठले, नानाजी गौतम, नन्दु टेम्भरे, दिलीप पटले, अशोक ठाकरे, कमल भगत, राजेश सहारे, दिलीप बिसेन, श्रीमती वर्षा डहरवाल, श्रीमती ओमेश्वरी कोहरे, श्रीमती ममता नेवारे, श्रीमती कला लिल्हारे, रविकांत बसेने, श्रीमती सुनिता गजबे, श्रीमती लक्ष्मी चित्रीव, श्रीमती सावित्री नेवारे, श्रीमती सनुल कोपड़े, श्रीमती मनीषा चौधरी, श्रीमती रेखा लिल्हारे, श्रीमती ममता उके,ज्ञश्रीमती प्रमिला कोठेकर, श्रीमती वर्षा बानेवार, श्रीमती शीला लिल्हारे, श्रीमती मीना मस्करे, रेखलाल मस्करे शामिल हैं।

भाजपा मंडल तिरोडी

क्रम में मंडल अध्यक्ष अविनाश देशमुख ने भाजपा मंडल तिरोडी कार्यकारिणी घोषित की है। इनमें उपाध्यक्ष- योगराज ठाकरे, राजकुमार हरिनखेड़े, महेश अग्रवाल, हुनेश पटले, श्रीमती दिप्ती पराग ठाकुर, परसराम नागेसर, महामंत्री- हंसराज रावतकर, श्रीमती पूजा मिहीर त्रिवेदी, मंत्री- श्रीमती रेखा परसराम उईके, श्रीमती गायत्री प्रेमचंद बोपचे, श्रीमती मोनिका अमोल गौतम, नेगेन्द्र चौहान, दिमांगचंद पटले, दिव्यांश कुमरे, कोषाध्यक्ष- कमल देशमुख, मीडिया प्रभारी- राहुल कुमार भुरे, आईटी प्रभारी, सुश्री सोनाली नागेश्वर, सोशल मीडिया प्रभारी- अमित कुमार जैन। कार्यकारिणी सदस्य- भूपेन्द्र चौधरी, घंसिलाल बिसेन, हिरामन कठौते, राजू गौतम, कमल खुरसैल, नितेश पांडे पुरोहित, श्रीमती ज्योत्सना जैसवाल, श्रीमती फौजिया खान, श्रीमती प्रेमलता पड़वार, सुश्री पूनम चित्रेश रावल, पिंटू शर्मा, रामप्रसाद पटले, प्रभुदयाल राना, राजहंस बिसेन, रितेश हरिनखेड़े, माताजी ममता मुकेश ठाकुर, पराग ठाकुर, चैनलाल बिसेन, संदीप परिहार, विजय पटले, श्रीमती निर्मला राहंगडाले, श्रीमती पुष्पा छत्रपाल ठाकुर, श्रीमती देवीसिंह चुनीलाल ठाकुर, श्रीमती ललिता कृष्णकुमार पटले, लक्ष्मी भगत, शैलेन्द्र सहारे, श्रीमती चित्रकला राजेन्द्र टांडेकर, श्रीमती ममता मानिक गोखे, श्रीमती हेमवती हेमराज सिन्हा, तरूण तुरकर, श्रीमती उर्मिला अशोक पटले, लोकचंद क्षीरसागर, श्रीमती गीता लक्ष्मण भलावे, बाबूलाल उईके, मानिकचंद गोखे, लक्ष्मी नारायण पटले, रोशनलाल कटरे, श्रीमती भूमेश्वरी पटले, शेरसिंह ठाकरे, हंसराज राउत, श्रीमती रेखाबाई ठाकरे, भूपेंद्र देशमुख शामिल हैं।

पचरा : छत्तीसगढ़ी जसगीत के कठिन विधा

छत्तीसगढ़ी जसगीत के समान्य परिचय :- जसगीत हमर छत्तीसगढ़ी लोक संगीत के जबर सुघ्घर वधा आए जेमा देवी, देवता के जस म गाए जाथे। हमर छत्तीसगढ़ म नवरात्रि के बेरा म विषेश रूप ले जसगीत गाथे जेमा बिशेस दिन के हिसाब से गाना गाये जथे जेन ल हमन जसगित के प्रकार कही सकथंन।

नवरात्रि म एक्कम के सुमरनी गीत, नेवता गीत

दूज, तिज अउ चतुर्थी म दुरगा माता के लिला के गीत जसगीत के रूप म गाए जाथे।

सियान मन बताथे कि पंचमी के दिन माता के सिंगार गीत गाए जाथे। अऊ बहुत सारा जसगित हे जेन म महादेव भगवान के बजरंग बलि के जस ल सेवा गीत के रूप म गाए जाथे। अड़बड़ अकन जसगीत विसेश देवी देवता के जइसे दंतेश्वरी दाई, खल्लारी दाई, बिलई माता, बमलेश्वरी दाई, चंद्रहासनी माता , अंगार मोती दाई के जसगीत रहिथे। सियान मन बताथे कि पचरा गीत ल पंचमी के बाद ही गाए जाथे।

त आवव जानन जसगित के सबले कठिन विधा पचरा के बारे म:-

पचरा छत्तीसगढ़ी जसगीत के एक कठिन अउ विशेष विधा हे, जऊन आमतौर मं देवी जस मं गाए जाथे। एला गाए बर गायक मन ला खास साधना अउ अभ्यास के जरूरत परथे। पचरा के मुख्य विशेषता एहे कि एला अत्यंत लयबद्ध अउ तीव्र गति मं गाए जाथे, जऊन ल गाने वाले अउ संगत देने वाले दुनों मन ला एक समान ऊर्जा अउ समर्पण के जरूरत होथे।

पचरा के विशेषता:-

1. लय अउ गति:- पचरा के गति बहुत तेज रहिथे, जऊन ला निभाना हर गायक बर कठिन होथे।

2. स्वर आरोह-अवरोह:- एमा स्वर के ऊँच-नीच के अत्यंत जटिलता रहिथे, जेकर कारण हर कोनो गायक

एला सहज नइ गा सकथे।

3. शब्द संरचना:- पचरा के बोल बहुते ही गूढ़ अउ भक्तिभाव से भरपूर रहिथे, जऊन ल याद रखना अउ सही ढंग से प्रस्तुत करना कठिन होथे।

4. संगत:- हारमोनियम, ढोलक, मंजीरा, अउ झांझ एमा विशेष महत्त्व रखथे।

5. सांस्कृतिक महत्व:- एला विशेष रूप से देवी जस मं गाए जाथे, जेखर कारण एक धार्मिक अउ आध्यात्मिक वातावरण बनथे।

पचरा गाना कठिन काबर होथे?

एमा गायक ला उच्च स्तर के रियाज के जरूरत परथे।

स्वर के सटीकता अउ ताल के सही पकड़ बहुत जरूरी होथे।

जसगीत गाने वाले मं प्रबल धैर्य अउ शारीरिक क्षमता होय के चाही।

संगतकार मन ला भी गायक के लय के अनुरूप संगत देना परथे, जऊन हर कठिन काम होथे।

पचरा जसगीत गाना एक कठिन लेकिन अत्यंत भक्ति से भरपूर विधा हे। ए गीत मन खासकर देवी जस मं गाए जाथे, जेमा गायक मन तेज गति मं, ऊँच-नीच स्वर के साथ गाथें। पचरा गाए बर सही रियाज, सांस नियंत्रण अउ भक्ति भाव जरूरी होथे।

पचरा जसगीत गाने के तरीका:-

1. सुर-ताल के अभ्यास:-

पचरा हर तेज गति मं गाए जाथे, ए खातिर हारमोनियम अउ ढोलक के सही ताल ल पकड़ना जरूरी हे।

आरोह-अवरोह (स्वर के ऊँच-नीच) के लगातार अभ्यास करना चाही।

2. शब्द के स्पष्टता:-

पचरा जसगीत मं शब्द बहुत जल्दी-जल्दी आथे, ए खातिर शब्द उच्चारण साफ होना जरूरी हे।

जसगीत के बोल मन ल याद करके अभ्यास करना चाही।

3. सांस नियंत्रण:-

तेज गति मं गाए के कारण गायक के साँस प्रबंधन सही होना चाही, ताकि स्वर बीच मं टूटे नइ।

लम्बे सुर लगाय बर प्राणायाम अउ श्वास अभ्यास मददगार होथे।

4. भक्ति भाव:-

पचरा जसगीत सिरिफ संगीत नइ, बल्कि भक्ति के एक रूप हे, एला गाते समय श्रद्धा अउ भाव जरूरी हे।

जसगीत के अर्थ ल समझ के गाए ले भावना अउ प्रभाव दुन्नो बढ़थे।

5. वाद्ययंत्र संगत:-

मंजीरा, झांझ, ढोलक अउ हारमोनियम के सही ताल मं संगत जरूरी हे।

गाने अउ वाद्ययंत्र के ताल एक संग मेल खाय, एखातिर अभ्यास करे जाय।

पचरा जसगीत के एक प्रसिद्ध गीत:-

1) तुम झुलव महामाई लिमुवा के डारा म हां

तुम झुलव महामाई लिमुवा के डारा म हां ।

जब काहेन के तोर झुलना बने हे, काहेन लागे डोरा।

जब काहेन के तोर झुलना बने हे, काहेन लागे डोरा।

उड़ान जब काहेन में तोर झुलना सजे हे लिमुवा के डारा म हां।

2)जब अमुवा काठ के झुलना बने हे , रेशम लागे डेरा।

जब अमुवा काठ के झुलना बने हे , रेशम लागे डेरा।

उड़ान :-जब हीरा मोती के झूलना सजे हे , लिमुवा के डारा म हां

तुम झुलव महामाई लिमुवा के डारा म हां तुम झुलव महामाई लिमुवा के डारा म हां ।

3) जब कौन बनावे तोर झुलना ओ माता, कौन बनावे तोर डोरा।

जब कौन बनावे तोर झुलना ओ माता, कौन बनावे तोर डोरा।

उड़ान :- जब कौन सजावे तोर झुलना हो माता लिमुवा के डारा म हां । 4)जब बढ़ई बनावे तोर झुलना हो माता , पटवा बनावे तोर डोरा ।

जब बढ़ई बनावे तोर झुलना हो माता , पटवा बनावे तोर डोरा ।

उड़ान :-जब सोनार सजावे तोर झुलना हो माता ,लिमुवा के डारा म हां ।

तुम झुलव महामाई लिमुवा के डारा म हां ।

तुम झुलव महामाई लिमुवा के डारा म हां समान्य जसगित अउ पचरा म अंतर:-

समान्य जसगीत ल एकड़िया जसगित तको केहे जाथे ए प्रकार के जसगीत मन के अंतरा ह छोटे छोटे होथे जइसे:-

यहाँ आपकी दी गई छवि में लिखे गए भजन की सभी पंक्तियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं:-

स्थायी:- आरती उतारव हो दियना थारी ला धर के दाई तोर पौरी पर के आरती उतारंव हो,

ये हो आरती उतारव हो दियना थारी ला धर के दाई तोर पौरी पर के आरती उतारंव हो।

अंतरा 1:- यहो सुधर अगर काड़ी धर के गंगुर धूप अउ चंदन, हो पान सुपारी नरियर धर के लाली चोवा बंदन हो।

हाथ जोड़ दोन माथ नवा के सुमिरो मै हा मने मन, बाधा विघ्नन सरी हरबे दाई झन आये कोनो अलहन।

ये हो चरण तोर पखारों हो दियना थारी ला धर के दाई तोर पौरी पर के आरती उतारंव हो।

ये हो आरती उतारव हो दियना थारी ला धर के दाई तोर पौरी पर के आरती उतारंव हो।। अऊ पचरा के अंतरा मन बहुत बड़े रहिथे अऊ ऐला एक सांस म गायेबर होथे, अउ ए गाना ल झोंकइया जेन ल हमन कोरस कहिथन ओमन ल अडबड़ कठिनाई होथे। जसगीत तो कोई भी गा लेही फेर जउन ह पचरा गा लेथे ओहा असल म जसगीत गवइया हरय।

निष्कर्ष:-

पचरा जसगीत के एक कठिन लेकिन अत्यंत प्रभावी विधा हे, जऊन ला गाने अउ समझे बर गहरे साधना के जरूरत परथे। ए छत्तीसगढ़ी संगीत परंपरा के एक महत्वपूर्ण हिस्सा हे, जऊन भक्ति अउ भजन के माध्यम से लोक संस्कृति ल सहेजे रखे हे।

- गणेश्वर पटेल, ग्राम पोटियाड़िह जिला धमतरी (छ ग)

वासंतिक नवरात्र

वासंतिक नवरात्र का प्रथम दिवस है। आज से ही हिन्दी नववर्ष संवत्सर 2082 का शुभारंभ हो रहा है। इस दिन का सनातन धर्म परंपरा में विशेष महत्व है। वासंतिक नवरात्र का प्रथम दिवस श्रद्धालु कलश स्थापना कर नौ दिनों तक मां दुर्गा के विभिन्न रुपों की अराधना... विधि-विधान के साथ करते हैं।

ज्योतिर्विद डॉ हेरम्ब कुमार मिश्र के अनुसार... हिन्दू पंचांग के साथ वैदिक और लौकिक दृष्टि से भी संवत्सर अति महत्वपूर्ण होता है।ग्रह, नक्षत्र,लगन, मुहूर्त, मांगलिक तिथियों की जानकारी इसी से प्राप्त होती है।

ब्रह्म पुराण, अथर्व वेद और शतपथ ब्राह्मण के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना प्रारंभ की थी।

हिन्दू संवत्सर का प्रारंभ महापराक्रमी राजा विक्रमादित्य ने किया था इसीलिए

इसका नाम विक्रम संवत पड़ा।

आंध्र प्रदेश में उगदिनाम पर्व आज ही मनाया जाता है तथा महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा मनाया जाता है।

वैदिक मान्यताओं के अनुसार लंका विजय से लौटने पर भगवान श्री राम का राज्याभिषेक आज ही हुआ था। चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा को ही धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ था।

भगवान विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार मत्स्यावतार के रूप में धरती पर अवतरित हुए थे। उन्होंने प्रलयकाल में अथाह जलराशि से मनु की नौका निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाये थे। अतः आज का दिन अति मंगलमय है।

मां शैलपुत्री नमोस्तुते वन्दे वांछित लाभाय चन्द्रार्धकृत शेखराम्।

वृषारुढ़ा शूलधरां शैलपुत्री यशस्विनीम्।

अर्थात मनोवांछित लाभ के लिये मस्तक पर अर्धचंद्र धारण कर वाली,शूलधारिणी यशस्विनी शैलपुत्री दुर्गा को नमन है।

आप सभी पर शारदीय नवरात्र के प्रथम दिवस मां शैलपुत्री की कृपा दृष्टि सदैव बनी रहे ??

मौलिक रचना -डॉ उर्मिला सिन्हा रांची झारखंड

एक देहाती की डायरी-

हमारी ज़िंदगी की किताब कोई ऐरा-गैरा, नत्थू-खैरा नहीं लिख सकता

मेरा जीवन कोरा कागज़ कोरा ही रह गया.... जीवन का इस तरह कोरा कागज़ रह जाना हिंदी फ़िल्मों में ही संभव है। असल जिंदगी में न पहले कभी ऐसा हुआ है और न आगे ही होने वाला है। आप कल्पना कीजिए कि किसी को जन्म के कुछ ही समय बाद जंगल में छोड़ दिया जाए तो उसकी ज़िंदगी मानवीय संपर्कों से विहीन हो सकती है लेकिन तब भी संभव है कि समय के साथ-साथ वह जंगल के किसी जानवर, पेड़-पौधे से पहचान बना ले। जहाँ कहीं भी आसरा बनाकर रहने लगेगा, जिस किसी पेड़ के फलादि खाएगा, उससे उसे प्रेम या लगाव हो ही जाना है। ऐसी स्थिति में ज़िंदगी के एकाध पन्ने पर तो उस जगह, उस या उन पेड़ों की उपस्थिति दर्ज हो ही जाएगी। तब उसके जीवन का पन्ना कोरा कागज़ कैसे रह सकता है? संभव ही नहीं है। फिर हम तो और भी सामाजिक ठहरे, हमारे साथ ऐसा कैसे संभव है?

हम हर किसी के श्रीमुख से सुनते ही रहते हैं कि मेरा जीवन तो खुली किताब है, उसे कोई भी पढ़ सकता है। या कोई श्रद्धावान शिष्य या चेला या अनुयायी या फोलोवर अपने चहेते नेता, अधिकारी, बाबा या उस व्यक्ति के लिए, जिसके प्रति उसकी गहरी श्रद्धा होती है के लिए कहते सुना जाता है कि फलाँ व्यक्ति का जीवन तो खुली किताब है। मैं सोचता हूँ कि भई! खुली क्यों रखी है! बंद कर दो। ढक्कन लगा दो या लगवा दो या लगाने के लिए कह दो। जिल्द बँधवा दो। आमने-सामने दोनों तरफ़ से बँधवा दो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। टंटा ही ख़त्म। लेकिन क्या ऐसा हो सकता है कि हमारा जीवन एक खुली किताब हो और उस पर दोतरफ़ा जिल्द बाँध दी जाए?

सार्वजनिक जीवन जीने वाले लोग ही ऐसे शब्दों-वाक्यों, कथोपकथनों का इस्तेमाल करते देखे गए हैं। नेता, बड़े लेखकों की बात न करते हुए हम आम आदमी की बात करें तो समुचित रहेगा। क्या किसी आम आदमी, जिसके संपर्क में बहुत कम लोग हों, घर, गाँव या ऑफ़िस के थोड़े से लोगों से उसका राब्ता होता हो, का जीवन भी खुली किताब की तरह होता है या हो सकता है? क्या उसे खुली किताब की तरह होना चाहिए? होना चाहिए तो क्यों और नहीं होना चाहिए तो क्यों?

किसी किताब को ख़रीदने, रखने, पढ़ने के लिए हम प्राथमिकता इस आधार पर तय करते हैं? उसका कवर-पेज देखकर या बाइंडिंग देखकर या अंदर के हर्फ़ देखकर या कोई और मानक होता है? अपने जीवन रूपी किताब की प्रस्तावना, भूमिका, आमुख, परिशिष्ट और अनुक्रमणिका हम ख़ुद लिखते हैं या कोई और लिखता है? ये कौन तय करता है कि हमारी ज़िंदगी रूपी किताब के सिलेबस में क्या-क्या शामिल होगा और क्या है जिसे हटाया जाना चाहिए। बेशक़ ये हमीं को करना चाहिए। पाठक के लिए आमुख हम ख़ुद लिखें। जीवन की भूमिका और प्रस्तावना भी हम ख़ुद लिखें। कौनसा पाठ पहले पढ़ा जाए और कौनसा बाद में, इसके लिए अनुक्रमणिका भी हम ख़ुद तैयार करें। जीवन की व्याकरण के सूत्र कौन बनाएगा? उस व्याकरण में संधि ही होगी या समास भी होगा। उसमें सिर्फ़ पर्यायवाची ही शामिल होंगे या पूरक या विलोम शब्द भी शामिल होंगे? ज़िंदगी के व्याकरण में एकार्थक शब्द ही शामिल होंगे या अनेकार्थक शब्दों को भी जगह मिलेगी? वर्ण विचार और शब्द विचार को ही रखा जाए या वाक्य विचार को भी कोई जगह दी जाए? भाषा के दो रूप, मौखिक और लिखित ही काम में लेंगे या सांकेतिक भाषा के लिए भी कोई गुंजाइश होगी? वर्तनी और उच्चारण की शुद्धता पर काम किया जाएगा या बच्चों की तोतली आवाज़ के लिए भी कोई कोना उस किताब में आरक्षित होगा?

उस किताब में सिर्फ़ गद्य ही हो या पद्य को भी स्थान दिया जाए? सिर्फ़ गद्य रखें तो क्यों और पद्य जोड़ें तो क्यों? पद्य के पद मुक्त छंद में हों या निराला की तरह छंद मुक्त लेखन करें? आदिकाल को रखें या छोड़ें? भक्तिकाल को रहें या छोड़ें? रखें तो कौनसा भाग रखें और हटाएँ तो किस भाग को हटाएँ? रीतिकाल को रखा जाए या सिर्फ़ इसलिए छोड़ दिया जाए कि इसमें महज सत्ताधारी का मिथ्या गुणगान है, आम जनता के मुद्दों को बहुत कम स्पेस मिला है? आधुनिक काल को संपूर्ण रूप में रखें या अपनी सुविधा के हिसाब से कुछ हिस्सों को रख लिया जाए?

क्या अपनी ज़िंदगी के सिलेबस के सभी भाग हम अपनी पसंद से चुन सकते हैं? क्या ज़िंदगी की किताब में महज सुखद पाठ ही शामिल होंगे या पीड़ादायक या दुखद पाठ भी पाठकों की संवेदना को झकझोरेंगे? कोई सुखद पाठ कब दुखद रूप धारण कर लेता है, इसका ज़िक्र भी हम करें या नहीं? क्या ये दुखद पाठ पहले दिन से दुखद थे या इन्होंने अपनी ज़रूरत और स्वार्थ के हिसाब से पन्नों को अलग रंग में रँगा है? यदि पहले सुखद थे तो क्यों और आज दुखद हैं तो क्यों? क्या ये सबक हमारी ज़िंदगी की किताब के लिए ज़रूरी थे या परिस्थितियों की वजह से आ गए? क्या हम इनसे बच सकते थे? हमारे पास बचने का विकल्प था भी या नहीं? क्या हमारा ही कोई विकल्प उस पाठ के नायक को मिल गया जिसकी वजह से उसने पाला बदल लिया या अब उसका स्वार्थ पूरा हो गया था? क्या संजय दत्त ने ऐसे ही लोगों के लिए यह गाना गया था- नायक नहीं, खलनायक हूँ मैं...?

ये सही है कि हम अपने जीवन के सभी पाठ ख़ुद नहीं लिख सकते। सार्वजनिक जीवन में कुछ पाठ परिस्थितिवश भी जुड़ते चले जाते हैं। यदि आप किसी महकमे में काम करते हैं तो सब कुछ आपकी मर्जी या इच्छा से तो नहीं हो सकता। सब आपकी तरह फ़िक्रमंद, सेवाभावी और भी नहीं हो सकते। कुछ लोग ऐसे भी मिलेंगे जो सिर्फ़ स्वार्थ साधने के लिए मीठी-मीठी बातें करेंगे। स्वार्थ सिद्धि के बाद कहेंगे- तू कौन? या जो काम आप करते आए हैं, कहने पर या बिन कहे, उसी काम को कोई और करने लगा हो। फिर तो तू कौन के आगे बे जुड़ जाए तो आश्चर्य नहीं होगा! हम चाहते हुए भी ऐसे पन्नों को अपनी ज़िंदगी की किताब से हटा नहीं सकते। क्योंकि इस किताब में पन्ने फाड़ने की छूट नहीं होती। आपको उन पन्नों के साथ ही जीना पड़ता है। हाँ, आप उन पन्नों को पढ़ने से सप्रयास बच सकते हो जो कि पूर्ण रूप से तो संभव भी नही है।

मैं जानता हूँ कि आप कहोगे कि हमने क्या नहीं किया। हर समय हर काम के लिए तैयार रहे, यहाँ तक कि बिना कहे भी काम किया या करके दिया। ये आपका स्वभाव था, वो उसका। जैसा आपको आता था, आपने किया। जैसा उनको आता था, उन्होंने किया। मैं यहाँ किसी धार्मिक या दार्शनिक किताब का ज़िक्र नहीं करने वाला कि भूल जाओ। या किसी नीति के दोहे का उल्लेख करने वाला कि बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध ले...! मैं तो कहूँगा कि शिद्दत से याद रखो ताकि भविष्य में और कोई ऐसी जुर्रत न कर सके।

ज़िंदगी की किताब के ऐसे पाठ अपने आगे-पीछे के साथ-साथ बहुत आगे तक के पाठों को भी प्रभावित करते हैं। क्योंकि पहले वाले पाठ तो लिखे जा चुके। अब आगे जो पाठ आप लिखने वाले हैं, वे उससे प्रभावित रहने वाले हैं। इस पाठ की छाया आगे आने वाले कई पाठों की सेहत बिगाड़कर रख देने वाली होगी। आप चाहकर भी इस छाया को अपना प्रभाव दिखाने से रोक नहीं सकते। आप संभलकर चलना शुरू कर देते हैं। आपके इसी संभलकर चलने के चक्कर में आप बाक़ी पाठों के साथ न्याय नहीं कर पाएँगे। आप सप्रयास ऐसे पाठों के दुहराव से बचेंगे। बच तो क्या पाएँगे लेकिन प्रयास ज़रूर करेंगे और प्रयास कभी विफल नहीं होते। लेकिन तब जीवन में वह सहजता, वह ठट्ठा मारकर हँसना, रुककर किसी का इंतज़ार करना इत्यादि सब नहीं कर पाएँगे।

मैं सिर्फ़ आगाह करना चाहता हूँ कि किसी के प्रति अपनी ओपिनियन बनाने में जल्दबाजी न करें। समय का इंतज़ार करें और चेहरे के नक़ाब को हटने दीजिए। किताब के बारे में जानने के लिए किताब के पन्ने पलटकर देखें और उस पलटने से होने वाली सरसराहट को महसूस कीजिए। उस सरसराहट में अपने लिए संदेश को सुनें और अप्लाई करें।

मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूँ कि अपने जीवन रूपी किताब के किसी पन्ने को कोई बिगाड़ने की कोशिश करे तो सावधानीपूर्वक उससे अपनी किताब छीन लें और बचने का प्रयास करें ताकि कोई आपकी किताब को रद्दी समझने की भूल न करें और बाक़ी के लोग भी सबक लेंगे। ऐसे लोगों से बचना मुश्किल है बस सावधानी रखी जा सकती है। और यह बात तो सड़क किनारे बोर्ड लगाकर लिखी जाती है- सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। अपने जीवन के छंद लिखने का हक़ सिर्फ़ हमें है, कोई ऐरा-गैरा, नत्थू-खैरा हमारी ज़िंदगी की किताब को अपने हिसाब से कैसे लिख सकता है?

अभिनव सरोवा, झुंझुनू(राजस्थान।)